आज की मुरली का सार --

संगम पर बाबा ने हमें जीते जी मरना सिखाया हैं. बाबा ने कहा, जो अभी जीते जी मरते हैं उनके दर पर कभी काल नहीं आ सकता. सतयुग हैं अमरलोक, वहॉ काल किसी को खाता नहीं, रावण राज्य हैं मृत्युलोक, इसलिए यहॉ सभी की अकाले मृत्यु होती रहती हैं.

किसको कहा जाता हैं, जीते जी मरना? हमें अपने में चेक करना हैं, की बाबा का बनने के बाद हमारे जीवन में क्या परिवर्तन आया?

आगे हमारी कलयुगी जीवन थी. खाना-पीना, मौज-मस्ती, मुवीस देखना, पार्टिओ में जाना. लेट तक जागना, लेट उठना. कितना गंदा जीवन था.

जैसे ही हम बाबा के बने, सबकुछ छूट गया. बाबा ने क्या किया? बाबा ने हमें, अपने पूज्य स्वरूप कि याद दिलाई. सतयुग में हम ऐसे थे, सतयुग में हमारी संपूर्ण आत्मा अभिमानी और पवित्र जीवन थी और हम कितने सुखी थे. हमारी आयु भी बहुत लम्बी (150 साल) थी. अब बाबा आये हैं, वही सतयुग कि स्थापना करने और हमें उसका मालिक बनाने.

बाबा ने सतयुग की याद दिला के, **हमारी वृति को परिवर्तन कर दिया**. हमारा जीवन जीने का तरीका ही बदल गया. बाबा ने हमें समझाया हैं की अब हम सब कि वानप्रस्थ अवस्था हैं. **हम संपूर्ण सात्विक पुरुषार्थी वानप्रस्थी हैं.** हम सब ज्ञानी आत्माये हैं. अब हमारे में कलियुगी जीवन का अंश भी नहीं हैं. हमारा संगमयुगी जीवन सच्चाई, सफाई और सादगी पूर्ण हैं. हमारा भोजन शुद्ध शाकाहारी और सात्विक, बाबा कि याद में बना हुआ होता हैं. हम भाग्यशाली आत्माओं को हर रोज अमृतवेले, स्वयं भगवान आकर जगाते हैं. स्वयं भगवान से हम मुरली सुनते हैं. बाबा के साथ हम भोजन करते हैं. बाबा के साथ हम काम पर जाते हैं और रात को बाबा ही हमें अपनी गोदी में सुला देता हैं.

कलियुग के मायावी काम-वासना और भोग-विलास से भरे जीवन से हम मर गये है और पूरषोतम संगमयुगी ईश्वरीय ब्राह्मण जीवन जी रहें हैं. हमारा ब्राह्मण जीवन हम बाबा कि श्रीमत् के आधार पर एक्युरेंट जी रहें हैं. भगवान स्वयं हमारा बाप बनकर पालना कर रहें हैं, टीचर बनकर पढ़ा रहे हैं और सतगुरु बन वरदानों से हमारी झोली भर रहे हैं. **ऐसा है, हमारा मरजीवा संगमयुगी अलौकिक ब्राह्मण जीवन. वाह रे मेरा पदमा-पदम भाग्यशाली जीवन वाह.**

ॐ शांति.